चित्रा

भाग २

(कक्षा १० 'ब' पाठ्यक्रम के लिए
हिन्दी काव्य की पाठ्यपुस्तक)

अनिल विद्यालंकार
शशि कुमार शर्मा
रामजन्म शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मार्च 1990
चैत्र 1912

प्रकाशन सहयोग

सी. एन. राव, *अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग*

प्रभाकर द्विवेदी *मुख्य सम्पादक*
दिनेश सक्सेना *सम्पादक*
राजपाल *सहायक सम्पादक*

यू. प्रभाकर राव *मुख्य उत्पादन अधिकारी*
सुरेन्द्र कांत शर्मा *उत्पादन अधिकारी*
टी. टी. श्रीनिवासन *सहायक उत्पादन अधिकारी*
कर्ण कुमार चड्ढा *वरिष्ठ कलाकार*

मूल्य : 6.00

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा अरुण ग्राफिक्स इंडिया 53 दरिया गंज में लेजर टाइपसेट होकर राकेश प्रेस A-7 नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया फेज II नई दिल्ली 110028 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में विद्यालय स्तर के विभिन्न शैक्षिक विषयों के पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों आदि के निर्माण का कार्य लगभग ढाई दशकों से हो रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के साथ ही ऐसी शिक्षण-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति के अनुसार शिक्षा बाल-केन्द्रित होगी और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाएगा। नई शिक्षा नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को केन्द्रिक शिक्षाक्रम के रूप में स्थान दिया गया है। यह एक दूरगामी शिक्षा नीति है और यदि इसका पालन सही ढंग से किया जाए तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्वपूर्ण योगदान मिल सकता है।

नई शिक्षा योजना की महत्वपूर्ण विशेषता उसकी बाह्य संरचना नहीं है अपितु वह परियोजना एवं दृष्टिकोण है जिसमें शिक्षा का संबंध राष्ट्रीय विकास के साथ जोड़ने पर बल दिया जाता है। इस दृष्टि से नवीन पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में निम्नलिखित सिद्धांतों का विशेष रूप से समावेश किया गया है :

1. ऐसी पाठ्यसामग्री एवं शैक्षिक क्रियाओं का समावेश जिनसे बालकों में राष्ट्रीय लक्ष्यों-जनतांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो और उनमें तर्कसंगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।
2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यसामग्री भारतीय जीवन-परिस्थितियों तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर आधारित हो और उनमें वांछित भावी विकास की दिशा भी परिलक्षित हो।
3. पाठ्यपुस्तकें बालकों के भावात्मक एवं बौद्धिक उत्कर्ष, चरित्र-निर्माण तथा स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध हों, उनके द्वारा बालकों में स्वयंशिक्षा एवं अधिकाधिक ज्ञानार्जन की उत्कंठा जागृत हो और वे निर्धारित पाठ्यविषय तक ही सीमित न रहकर विशद एवं व्यापक अध्ययन के लिए जिज्ञासु तथा तत्पर बने रहें।
4. नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री के चयन में केन्द्रिक शिक्षाक्रम से संबंधित विषय सामग्री एवं जीवन-मूल्यों पर विशेष बल हो।
5. सांप्रतिक एवं भावी जगत को सुखद सुंदर बनाने वाली जीवन परिस्थितियों की ओर संकेत करने वाले पाठों का समावेश किया गया हो।

उपर्युक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विविध विषयों के पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तक निर्माण की योजना तैयार की गई है। इस कार्य को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रामाणिक बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर के विषय-विशेषज्ञों, अधिकारी विद्वानों एवं

शिक्षकों का सहयोग प्राप्त किया गया।

इस संदर्भ में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हिन्दी समिति के अध्यक्ष प्रो० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा अन्य सदस्यों के सहयोग के लिए मैं विशेष आभारी हूँ।

परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डा० अनिल विद्यालंकार (अब अवकाश प्राप्त) और रीडर डा० शशिकुमार शर्मा (अब अवकाश प्राप्त) ने विभाग में अपने कार्यकाल के दौरान इस पुस्तक के संपादन का कार्य किया। विभाग के डा० राम जन्म शर्मा ने इसका अंतिम प्रारूप तैयार किया तथा बड़े परिश्रम से इसका संपादन किया। मैं अपने इन सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जिन लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति दी है, उनके प्रति हम विशेषरूप से अनुगृहीत हैं।

आशा है, छात्रों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पुस्तक उपादेय सिद्ध होगी। इसके परिष्कार की दृष्टि से सुविज्ञजनों द्वारा भेजे गए सुझावों और परामर्शों का हम सदा स्वागत करेंगे।

पी० एल० मल्होत्रा

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में कृपापूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है-

डा० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अध्यक्ष, हिन्दी समिति, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली , सुरेन्द्रपाल मित्तल, श्रीमती कमल वासुदेव, श्री हरीशचंद्र, (सदस्य, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड),श्री निरंजन कुमार सिंह, डा० आनंद प्रकाश व्यास, डा० कृष्णदत्त पालीवाल, डा० मानसिंह वर्मा, डा० सच्चिदानंद सिंह "साथी", डा० शंभूनाथ, डा० सुबास कुमार, डा० एन० सुन्दरम्, डा० सुधांशु चतुर्वेदी, डा० मान्धाता ओझा, डा० महेन्द्रनाथ दूबे, डा० श्यामबिहारी राय, श्री बालकृष्ण सिंहल, डा० कमल सत्यार्थी, डा० देवराज शर्मा "पथिक", डा० जयपालसिंह "तरंग", श्री कौस्तुभ पंत, डा० राजेश कुमार, डा० सुरेश पंत, डा० (श्रीमती) संतोष माटा, डा० भागीरथ भार्गव और डा० जंगबहादुर पाण्डेय।

हिन्दी कविता की विकास यात्रा

भारत के विशाल भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी भाषा के विकास की एक सुदीर्घ परंपरा रही है, जिसमें देश के जनजीवन की विविध सांस्कृतिक, सामाजिक प्रवृत्तियाँ प्रतिबिंबित हुई हैं। लगभग १००० ईस्वी सन् के आसपास, प्रारंभ में अपभ्रंश परंपरा ही परवर्ती हिंदी साहित्य की आधारभूमि बनी, परंतु धीरे-धीरे अपभ्रंश के चंगुल से मुक्त होकर स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज और अवधी उभर कर आईं और इन दोनों भाषाओं का साहित्य हिंदी क्षेत्र की पहचान बन गया। तब से आज तक हिंदी काव्यधारा पुराने तटबंधों को तोड़ती और नवीन दिशाएँ खोजती अतीत से भविष्य की ओर निरंतर बहती जा रही है।

हिंदी काव्यधारा की इस सुदीर्घ परंपरा को साहित्य के इतिहासकारों ने प्रमुख काव्य प्रवृत्तियों के आधार पर मुख्यतः चार कालखंडों में विभाजित किया है--आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल। आधुनिक कविता सामाजिक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अनेक सोपानों से गुजरी है, जिन्हें छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद की कविता आदि नाम दिए गए हैं। वस्तुतः इस प्रकार का नामकरण लगभग हजार वर्षों के साहित्य के अध्ययन की सुविधा के लिए किया गया है। सच तो यह है कि हिंदी की जीवंत काव्यधारा ने एक सतत विकासशील समाज के सामाजिक परिवर्तनों को वाणी ही नहीं दी, वह उस परिवर्तन की भागीदार भी रही है।

अपने प्रारंभिक युग (१४ वीं शताब्दी तक) में हिंदी कविता अपभ्रंश के बंधन से निकलकर अपना स्वतंत्र रूप ग्रहण कर रही थी। तत्कालीन भारत छोटे-छोटे राज्यों में बँटा था और सामंतवाद का बोलबाला था। कविता की मुख्य प्रवृत्ति एक ओर उत्साह-उमंग पैदा करने वाली काव्य रचना की थी, तो दूसरी ओर कुछ कवि सामाजिक रूढ़ियों का विरोध कर आध्यात्मिक काव्य रचना भी कर रहे थे। चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो), नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो), जगनिक (आल्हखंड) आदि पहली प्रवृत्ति के कवि थे तो चर्यागीतों के रचयिता जैनकवि सरहपा, कण्हपा दूसरी के। इसी कालखंड के अंतिम छोर पर विद्यापति और अमीर खुसरो की स्फुट रचनाओं ने कोमल मानवीय भावनाओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान की।

पंद्रहवीं शताब्दी के आसपास कविता के विषय, भाव, भाषा और काव्यशैली में पर्याप्त

अंतर स्पष्टतः दिखाई पड़ता है। आदिकाल में जहाँ राजाओं और वीर पुरुषों के प्रशस्तिपरक काव्य लिखे गए वहाँ परवर्ती काव्य में यह प्रशस्ति भाव भक्तिभावना में बदल गया और ईश्वर भक्ति का स्वर स्पष्ट रूप से लक्षित होने लगा, इसीलिए इसे भक्तिकाल (१५वीं-१६वीं) शताब्दी कहा जाता है। इस काल में ब्रज और अवधी में विपुल और बहुविध काव्य रचना हुई। इसे हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त बाह्याडंबरों एवं अंधविश्वासों का खंडन कर राम-रहीम की एकता प्रतिपादित की और मन की पवित्रता पर बल दिया। इसी परंपरा में दादू, नानक, रैदास आदि कवि भी समाज के तथाकथित निम्न और शोषित वर्गों से आए और उन्होंने जातिवाद, मतवाद, धर्मांधता आदि को गंभीर चुनौती दी। जायसी ने प्रचलित लोककथा के माध्यम से प्रेम और विरह की वेदना को अपने काव्य पदमावत में अभिव्यक्त किया।

ज्ञान और प्रेम को महत्व देने वाली इस धारा के अतिरिक्त इस युग में दूसरी महत्वपूर्ण धारा है, जो अवतार को मानती है और सगुण-साकार रूप की पूजा-उपासना में विश्वास करती है।

इस सगुण काव्यधारा के अंतर्गत सूर, तुलसी और मीरा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। तुलसी और सूर ने क्रमशः राम और कृष्ण के रूप में विष्णु के अवतारों का मानव-रूप में चरित्र-चित्रण कर उन्हें आम जन के निकट लाने का सराहनीय प्रयास किया। रहीम और रसखान ने भी भक्ति में डूब कर सुंदर काव्य रचना की है।

अपने समग्र रूप में भक्तिकालीन कविता एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती जान पड़ती है, जो तत्कालीन सामाजिक स्थिति में विद्यमान अव्यवस्था को स्वीकार करती है। निर्गुण शाखा धार्मिक बाह्याचारों को इसका कारण मानती है और सगुणशाखा वर्णाश्रम व्यवस्था में आई शिथिलता को। इस कालखंड की कविता का एक महत्वपूर्ण योगदान यह भी था कि तत्कालीन कवियों ने दो लोक-भाषाओं--ब्रज और अवधी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिससे उनकी कविता को जनसामान्य तक पहुँचने में सरलता हुई। यद्यपि सभी भक्त कवियों ने अपनी-अपनी विचारधारा के अनुसार काव्य रचना की परंतु ईश्वर भक्ति और निश्छल समर्पण का भाव सभी विचारधाराओं में समान रूप से मिलता है।

भक्तिकाल के दौर में ईश्वर को सर्वस्व समर्थन के भाव के साथ-साथ एक नकारात्मक भाव भी फैला कि यह जीवन यह संसार भ्रम है, मायाजाल है अतः त्याज्य है। भक्तिपरक कविता के साथ ही आगे ऐसी काव्यधारा दिखाई पड़ती है, जो परमार्थ या परलोक के स्थान पर लौकिक जीवन और उसकी सुख सुविधाओं को अधिक महत्व देने लगी। लोकमंगल कवि का प्रथम उद्देश्य नहीं रहा। वह राजाश्रय में रहकर आश्रयदाता को रिझाने के लिए काव्य रचना करने लगा। इसके परिणाम स्वरूप कविता के उपादान सीमित हो गए। वह एक बार फिर सामंती जीवन की ओर उन्मुख हो गई और लोकजीवन से हट कर दरबारों की सजावट का साधन बन गई।

रीतिकालीन कविता की परंपरा का प्रारंभ केशवदास से माना जाता है। बिहारी इस दौर के एक महत्वपूर्ण कवि हैं, जिन्होंने दोहा जैसे छोटे से छंद की गागर को अर्थगांभीर्य के सागर से भर दिया। अन्य कवियों में मतिराम, देव, सेनापति, पद्माकर आदि प्रमुख हैं, जिनकी रचनाएँ माधुर्य और लालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। घनानंद, बोधा, ठाकुर आदि की कविताएँ परंपरा से कुछ भिन्न हैं। कुल मिलाकर रीतिकालीन हिंदी कविता एक ओर ब्रजभाषा को सजाने और सँवारने में तथा दूसरी ओर काव्य-कला और शब्द साधना की चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रथम स्वाधीनता संग्राम (१८५७) ने भारतीय समाज को भीतर तक झकझोर दिया था। इससे एक नयी चेतना का सूत्रपात हुआ, जिसने देश के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी योगदान दिया। विज्ञान, औद्योगीकरण, चिंतन तथा साहित्य ने भी भारतीय मनीषा को नए ढंग से सोचने के लिए विवश किया। ऐसे कुछ समर्थ प्रेरक कारणों के फलस्वरूप साहित्य से नई अपेक्षाएँ की जाने लगीं। इस प्रकार सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय नवचेतना ने हिंदी कविता को एक नवीन मार्ग पर अग्रसर किया। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि अब ब्रज को ही काव्य भाषा बनाने का आग्रह भी समाप्त होने लगा। खड़ी बोली हिंदी काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई।

भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी कविता के जनक कहे जाते हैं। भारतेंदु ब्रज और खड़ी बोली दोनों का काव्य में प्रयोग कर रहे थे। खड़ी बोली काव्य का प्रारंभ श्रीधर पाठक से माना जाता है। श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि ने प्रकृतिप्रेम, देशप्रेम और मानवीय प्रेम की उत्कृष्ट कविताएँ लिखीं। इस प्रवृत्ति को समीक्षकों ने स्वच्छंदतावादी कहा है। *अतीत का गौरवगान कर राष्ट्रीय भावना को जगाने वाली चेतना लेकर अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तथा मैथिलीशरण गुप्त ने क्रमशः 'प्रियप्रवास' और 'भारतभारती' की* रचना की। 'हरिऔध' की भाषा संस्कृत का सहारा लेकर चली पर मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारतभारती' में सीधी सादी खड़ी बोली का प्रयोग किया। राष्ट्रीयचेतना से भरी इस ओजस्वी काव्य प्रवृत्ति के अन्य यशस्वी कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान और रामधारी सिंह 'दिनकर' प्रमुख हैं।

श्रीधर पाठक और रामनरेश त्रिपाठी द्वारा प्रवर्तित स्वच्छंदतावादी काव्यधारा ने आगे चलकर प्रेम और सौंदर्यचेतना की नयी भावभूमि में प्रवेश किया जिसे छायावादी कविता कहा जाता है। इस कविता धारा के प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस काव्यधारा का एक योगदान यह भी है कि खड़ी बोली हिंदी अपने खड़े और खुरदरेपन को छोड़कर एक समर्थ काव्यभाषा के रूप में उभर आई। छायावादी कवियों के ही समकालीन कुछ ऐसे कवि भी थे जो अपनी कोमल अनुभूतियों को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे थे। इनके गीतों में प्रेम, यौवन और अल्हड़ मस्ती का स्वर प्राप्त होता है। गीत रचना से हिंदी काव्य को समृद्ध करने वाले प्रमुख कवियों में नरेंद्र शर्मा, हरिवंशराय 'बच्चन', रामेश्वर

शुक्ल 'अंचल', भगवती चरण वर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', उल्लेखनीय हैं। आगे चलकर इसी परंपरा में गोपालसिंह 'नेपाली', गोपालदास 'नीरज', रामावतार त्यागी, रामानंद दोषी, रमानाथ अवस्थी, वीरेंद्र मिश्र आदि प्रमुख कवि हुए।

छायावादी युग की अति भावुकता और कल्पनाशीलता के समानान्तर कुछ कवियों में यथार्थ के प्रति आग्रह बढ़ा। सन् १६३६ के आसपास हिंदी कविता में पहली बार शोषित-पीड़ित और दीन-हीन जन के प्रति व्यापक सहानुभूति का स्वर उभरा। यह स्वर इतना मुखर और युगधर्म के अनुकूल था कि छायावाद के अग्रणी कवि पंत और निराला भी यथार्थवादी कविताएँ करने लगे। इस धारा को प्रगतिवाद नाम दिया गया। नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', आदि ने प्रगतिवादी काव्यधारा को समर्थ योगदान दिया।

आगे चलकर प्रगतिवादी काव्यधारा की भी यह कहकर आलोचना की जाने लगी कि इसमें काव्यगत उदासीनता है। फिर काव्य और रूप की स्थापना के आग्रह में कविता अंतर्मुखी हो गई और सामान्य पाठक के लिए दुरूह भी हो गई। इस नई प्रवृत्ति को प्रयोगवाद कहा गया। अज्ञेय, गिरजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, मुक्तबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता इस धारा के प्रमुख कवि हैं।

स्वतंत्रता के बाद की हिंदी कविता एकाधिक दिशाओ में बड़े वेग और आवेग के साथ अग्रसर होती दिखाई पड़ती हैं। प्रारंभिक वर्षों में प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कविताएँ साथ-साथ लिखी जाती रहीं। प्रारंभ में प्रयोगधर्मा कहे जाने वाले कवि रचना में ईमानदारी, अनुभूति की प्रामाणिकता और आलोचना की बात कहने लगे। इस नवीन प्रवृत्ति को नयी कविता कहा गया। अज्ञेय के अलावा मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती,श्रीकांत वर्मा आदि 'नयी कविता' के समर्थ कवि माने जाते हैं।

साठोत्तरी कविता के लिए किसी निश्चित प्रवृत्ति की संज्ञा देना कठिन है। पर इतना कहा जा सकता है कि विगत तीस-चालीस वर्षों में काव्यजगत ने अनेक आयामों को छूने की चेष्टा की है। सामाजिक वैषम्य, रूढ़ियाँ, व्यवस्थागत दोष, टूटते जीवन मूल्य आदि अनेक बातें कविता का विषय बनी हैं। कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर परिवर्तन आया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि अनेक कवि जो प्रारंभ मे प्रगतिवादी कहे गए या प्रयोगवाद के नाम से उभरे वे ही नयी कविता के दौर में और तदंतर साठोत्तरी दशकों में भी काव्यक्षेत्र में प्रतिष्ठित रहे। शिवमंगलसिंह 'सुमन', नागार्जुन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, सुदामापांडे 'धूमिल', आदि इस काल खंड के चर्चित कवि हैं।

पिछले दो तीन दशकों में कुछ नए हस्ताक्षर भी अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं, जिनमें विनोद कुमार शुक्ल, राजेश जोशी, लीलाधर जगूड़ी,चंद्रकांत देवताले, सोमदत्त आदि उल्लेखनीय हैं।

इसके पहले लगभग एक हजार वर्ष के हिंदी काव्य के विकास की झलक संक्षेप में दी गई है, किंतु प्रस्तुत संकलन में दी गई कविताएँ इतिहास या काल क्रमानुसार नहीं है। इसके पीछे मुख्य कारण पाठक में कविता से लगाव पैदा करना है। साहित्य के गंभीर अध्येता के लिए कविता का कालक्रमिक अध्ययन उपयोगी हो सकता है, परंतु माध्यमिक स्तर के हिंदी छात्रों के लिए कवि से भी अधिक महत्वपूर्ण उसकी कविता है। रचना के माध्यम से वह रचनाकार को पहचाने तो अपनी स्वतंत्र राय बना सकेगा। काव्य के व्यापक क्षेत्र में से जो रचनाएँ चुनी गई हैं वे छात्रों के वय, रुचि और परिवेश के अनुकूल हैं और उन्हें सात वर्गों में बाँट लिया गया है।

'प्रकृति सौंदर्य' की कविताएँ हिन्दी में ही नहीं सभी भाषाओं में सर्वाधिक लिखी गई हैं, क्योंकि प्रकृति के साथ मनुष्य का सनातन और अटूट संबंध है। सुमित्रानंदन पंत की 'वसंत' कविता फागुन के महीने में चारों ओर स्वर्गीय सुंदरता की सी झलक देती है। कवि की सूक्ष्म दृष्टि प्रकृति में वसंत ऋतु के आगमन से होने वाले परिवर्तनों का चित्रण तो करती ही है, युवा और प्रेमी मन में वसंत के प्रभाव को भी रेखांकित करती है। 'कतकी पूनों' में अज्ञेय ने कार्तिक पूर्णिमा की रात के दृश्य की मोहकता को साकार कर दिया है। छोटे से फलक में कवि ने अनेक चित्र अंकित किए हैं। 'मेघ बजे' नागार्जुन की विशिष्ट शैली में लिखी कविता है, जिसमें मेघ बजे की टेक की आवृत्ति के साथ-साथ वर्षा के प्रभाव और परिणामों का चित्रण है।

'प्रेम और सौंदर्य', वर्ग में रसखान, भारतेंदु और 'बच्चन' की रचनाएँ हैं। रसखान का सवैया श्रीकृष्ण के मोहक रूप सौंदर्य पर केन्द्रित है, तो भारतेंदु का कवित्त सावन की रात में श्रीकृष्ण से दूर होने की विरह कथा पर। 'बच्चन' की कविता। 'हंस की विदा' ऐसे सांथी के विदा के समय लिखी गई है, जिसके साथ थोड़ा-सा समय प्यार से बिताया गया था। कविता के अंत में जीवन को नवीन दृष्टि से देखने का संदेश भी दिया गया है।

'जीवनदर्शन' वर्ग की कविताओं में एक-न-एक ऐसी बात गुंथी है जो हमारी जीवन दृष्टि में विस्तार देकर उसमें आस्था जगाती है। 'हरिऔध' की 'एक तिनका' कविता विनम्रता का जीवनमूल्य संकेतित करती है, तो सियाराम शरण गुप्त की 'खिलौना' कविता में विभिन्न आर्थिक परिवेश के बालकों का हठ चित्रण है। दोनों ही कविताएँ द्विवेदी युगीन सीधी-सादी भाषा का उदाहरण भी हैं। केदारनाथ सिंह की कविता 'निराला को याद करते हुए' में अभावों से निरंतर संघर्ष करते कवि की स्मृति भीतर तक छू जाती है। कीर्ति चौधरी की कविता 'एक सुनहली किरण उसे भी दे दो' में आशावादी स्वर है, इसमें समाज के शोषित पीड़ित वर्ग के प्रति संवेदना प्रकट की गई है।

'भक्तिखंड' में तुलसी और मीरा के पदों का परंपरागत स्वर है तथा सर्वस्व समर्पण का भाव है। दोनों ही पदों में अनेक पौराणिक संदर्भ हैं। पंत की कविता 'नवप्रकाश बन आओ' का फलक बड़ा विस्तृत है। उसमें मानवमात्र के लिए ज्ञान, प्रेम, विश्वास, शांति आदि की याचना की गई है। नरेंद्र शर्मा की कविता 'देवमेरे' में एकांतसाधना का स्वर है।

'उत्साह और आत्मविश्वास' वर्ग की कविताओं का स्वर उदात्त और प्रेरक है। सोहनलाल द्विवेदी की 'उन्हें प्रणाम' कविता में देश के लिए अपनी जान को हथेली पर रखकर संघर्ष करनेवालों की वंदना की गई है और रामकुमार वर्मा की कविता 'ललकार' में पौराणिक-ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख कर ओजस्वी स्वर में नवयुवकों को जागरण का संदेश दिया गया है। देवराज दिनेश की कविता 'हाथ की रेखा मिटा दें' में भाग्यवाद को तिलांजलि देकर कर्मवादी बन आत्मविश्वास पूर्वक समानता प्राप्त करने का प्रेरक संदेश है।

'देश प्रेम और नवजागरण' वर्ग में संकलित चारों कविताएँ भिन्न-भिन्न भंगिमाओं में जागरण का संदेश देती है। 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग' से प्रसाद का प्रसिद्ध गीत है, जिसने भारत के अमर वीरपुत्रों को स्वतंत्रता संघर्ष के पुण्यपंथ में बढ़ते रहने का संदेश दिया। 'तोड़ती पत्थर' में निराला ने श्रमजीवी के हथौड़े से पाषाणहृदय शोषक वर्ग पर चोट की है। मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'समता का संवाद' समन्वयवादी भारतीय संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती है। शील की कविता 'मेरे देश' में जाति-धर्म के पचड़ों को छोड़ देश के सूरजमुखी भविष्य को संजाने-सँवारने का आग्रह है।

'विविध' की दो कविताएँ 'बंजारानामा' और 'एक फूल की चाह' दो भिन्न भाव भूमियों पर आधारित हैं। 'बंजारानामा' का संदेश है कि जहाँ सब कुछ नाशवान हो वहाँ अहंकार करना व्यर्थ है। सियाराम शरण गुप्त की कविता 'एक फूल की चाह' में भारतीय समाज के एक नकारात्मक पक्ष की करुणा व्यक्त हुई है, जो अब मिट रही है, पर उसका ऐतिहासिक महत्व है। कविता में यह भाव हृदय को छूता है कि पिता द्वारा अपनी अबोध बालिका की अंतिम इच्छा पूरी न कर पाने के लिए संपूर्ण समाज उत्तरदायी है। इस कविता में तत्कालीन युगबोध का कटु यथार्थ झलकता है।

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आतमा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

विषय सूची

प्रकृति सौंदर्य

१.१ वसंत

चंचल पग दीप शिखा के धर
गृह, मग, वन में आया वसंत !
सुलगा फाल्गुन का सूनापन
सौंदर्य शिखाओं में अनंत !
सौरभ की शीतल ज्वाला से
फैला उर-उर में मधुर दाह
आया वसंत,भर पृथ्वी पर
स्वर्गिक सुंदरता का प्रवाह !
पल्लव-पल्लव में नवल रुधिर,
पत्रों में मांसल रंग खिला,
आया नीली पीली लौ से
पुष्पों के चित्रित दीप जला !
अधरों की लाली से चुपके
कोमल गुलाब के गाल लजा,
आया,पंखड़ियों को काले-
पीले धब्बों से सहज सजा।
कलि के पलकों में मिलन स्वप्न,
अलि के अंतर में प्रणय गान
लेकर आया प्रेमी वसंत,-
आकुल जड़ चेतन स्नेह प्राण !
काली कोकिल !-सुलगा उर में
स्वरमयी वेदना का अँगार,
आया वसंत, घोषित दिगंत
करती, भर पावक की पुकार !
आः, प्रिये ! निखिल ये रूप रंग
रिल-मिल अंतर में स्वर अनंत

रचते सजीव जो प्रणय मूर्ति
उसकी छाया, आया वसंत !

-सुमित्रानंदन पंत

१.२ कतकी पूनो

छिटक रही है चाँदनी,
मदमाती, उन्मादिनी,
कलगी-मौर सजाव ले
कास हुए हैं बावले,
पकी ज्वार से निकल शशों की जोड़ी गई फलाँगती
सन्नाटे में बाँक नदी की जगी चमक कर झाँकती ।
कुहरा झीना-झीना और महीन,
झर-झर पड़े अकासनीम,
उजली-लालिम मालती
गंध के डोरे डालती,
मन में दुबकी है हुलास ज्यों परछाईं हो चोर की--
तेरी बाट अगोरते ये आँखें हुईं चकोर की !

-अज्ञेय

१.३ मेघ बजे

धिन-धिन धा धमक-धमक
मेघ बजे
दामिनि यह गई दमक
मेघ बजे
दादुर का कंठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचंदन
मेघ बजे
हल का है अभिनंदन
मेघ बजे
धिन-धिन धा--

-नागार्जुन

प्रश्न-अभ्यास

१.१ वसंत

१. वसंत ऋतु में प्रकृति में होनेवाले परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।

२. निम्नलिखित पदों के विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए :
(क) सौरभ की शीतल ज्वाला (ख) उर-उर में मधुर दाह

३. कवि ने इस कविता में प्रकृति का मानवीकरण किन-किन रूपों में किया है? उदाहरण सहित लिखिए।

४. कवि ने वसंत को किसकी छाया कहा है और क्यों?

५. कविता में प्रयुक्त उन पदों को रेखांकित कीजिए जिनमें अनुप्रास का चमत्कार दिखाई पड़ता है।

६. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिएः

(क) चंचल पग दीप शिखा के धर,
गृह, मग, वन में आया वसंत!

(ख) लेकर आया प्रेमी वसंत,--
आकुल जड़ चेतन स्नेह प्राण!

(ग) काली कोकिल! --सुलगा उर में
स्वरमयी वेदना का अंगार
आया वसंत,घोषित दिगंत
करती,भर पावक की पुकार!

१.२ कतकी पूनो

१. कविता के आधार पर कार्तिक पूर्णिमा की चाँदनी के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

२. कार्तिक की मदमाती चाँदनी में किस-किसने अपने सौंदर्य से कवि को अभिभूत किया है?

३. चाँदनी का प्रभाव निम्नलिखित वस्तुओं पर किस-किस रूप में दिखाई देता है:
(क) कास (ख) शशकों की जोड़ी (ग) मालती (घ) कवि

४. निम्नलिखित विशिष्ट प्रयोगों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिएः
(क) उन्मादिनी चाँदनी (ख) बावले कास (ग) गंध के डोरे (घ) दूब की हुलास

५. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव समझाइएः
(क) सन्नाटे में बाँक नदी की जगी चमक कर झाँकती।

(ख) उजली-लालिम मालती
गंध के डोरे डालती

(ग) मन में दुबकी है हुलास ज्यों परछाईं हो चोर की।

६. 'तेरी बाट अगोरते ये आँखें हुईं चकोर की'-पंक्ति में 'तेरी' किसे कहा गया है? उसकी बाट देखने में कवि की आँखों के चकोर की आँखें बन जाने से क्या तात्पर्य है?

७. इस कविता में चाँदनी की चित्रदीर्घा में अनेक सौंदर्य चित्र सजाए गए हैं:

(क) कलगी मोर सजाव ले
कास हुए हैं बावले

(ख) पकी ज्वार से निकल शशों की जोड़ी गई फलाँगती

(ग) सन्नाटे में बाँक नदी की जगी चमक कर झाँकती

(घ) कुहरा झीना और महीन
झर-झर पके अकासनीम

(ड.) उजली लालिम मालती
गंध के डोरे डालती

इनमें से किस सौंदर्य-चित्र ने आपको सबसे अधिक चमत्कृत किया है और क्यों?

१.३ मेघ बजे

१. कविता के आधार पर बादलों के ध्वनि-सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

२. बादलों के वाद्य-यंत्र बजते ही पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ा?

३. हल का अभिनंदन क्यों किया जा रहा है?

४. भाव स्पष्ट कीजिए-

पंक बना हरिचंदन
मेघ बजे
हल का है अभिनंदन
मेघ बजे
धिन-धिन धा-

५. 'बादल' विषय पर सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', केदारनाथ सिंह और धर्मवीर भारती की एक-एक कविता खोजिए और कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

१.१ वसंत

मग = मार्ग। **अनंत** = अंतहीन, जिसका अंत न हो। **सौरभ** = सुगंध। **उर** = हृदय। **प्रवाह** = बहाव। **पल्लव** = पत्ती। **रुधिर** = रक्त। **प्रणय** = प्रेम। **दिगंत** = दिशा का अंत।

निखिल = सभी,संपूर्ण।

१.२ कतकी पूनो

उन्मादिनी = मस्त कर देने वाली, पागल बना देने वाली। बावला = सनकी, सिड़ी, पागल। शशकों = खरगोश। बाँक = टेढ़ापन। अकासनीम = एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ बहुत सुंदर होती हैं। बाट अगोरना = प्रतीक्षा करना। चकोर की आँखें होना = टकटकी लगाकर देखना।

१.३ मेघ बजे

हरिचंदन = मस्तक पर भक्ति भाव से लगा चंदन का तिलक। हल = खेत जोतने का यंत्र।

प्रेम और सौंदर्य

२.१ सोहत है चँदवा सिर

सोहत है चँदवा सिर मोर के तैसिये सुंदर पाग कसी है।
तैसिये गोरज भाल बिराजति जैसो हियें बनमाल लसी है।
रसखानि बिलोकत बौरी भई दृग मूँदिकै ग्वालि पुकारि हँसी है।
खोलि री नैननि, खोलौं कहा वह मूरति नैननि माँझि बसी है।।

-रसखान

२.२ घेरि घेरि घन छाए

घेरि-घेरि घन आए छाय रहे चहुँ ओर
    कौन हेत प्राननाथ सुरति बिसारी है।
दामिनी दमक जैसी जुगनूँ चमक तैसी
    नभ में बिशाल बग-पंगति सँवारी है।
ऐसी समै 'हरिचंद' धीर न धरत नेकु
    बिरह-बिथा तें होत ब्याकुल पियारी है।
प्रीतम पियारे नंदलाल बिनु हाय यह
    सावन की रात किंधौं द्रौपदी की सारी है।।

-भारतेन्दु

२.३ हंस की विदा

हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा
हेम हंसनी, और इतना भी यहाँ पर कम नहीं है।
एक आँधी है उठी गर्दोगुबारी
औ' इसी के साथ उड़ जाना मुझे है,
जानता मैं हूँ नहीं, कोई नहीं है,
कब तुम्हारे पास फिर आना मुझे है,
यह विदा का नाम ही होता बुरा है
डूबने लगती तबीयत, किन्तु सोचो--
हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा,
हेम हंसनी, और इतना भी यहाँ पर कम नहीं है।
मैं निराला था, निराले देश आया
औ' निराली ही लिए चाहें, उमंगें,
पर मिलीं खुलकर सलिल-बल्कल नलिनियाँ
और बाँहें खोल जल-कुंतल तरंगें,
बीच जिनके हम फिरे स्वच्छंद होकर
और जिन पर झूम झूले और तैरे, किन्तु मुझको,
हम अलग होने चले हैं जब हमारा
हर्ष सीमा छू रहा है, लेश इसका गम नहीं है।
हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा,
हेम हंसनी, और इतना भी यहाँ पर कम नहीं है।
क्या प्रतीक्षा हम करेंगे उस घड़ी की
एक दिल से दूसरा जब ऊब जाए,
जिस खुशी के बीच में हम डूबते हैं
जब हमारे बीच में वह डूब जाए
अलविदा का वक्त है यह, जब हमारे
बीच शंका है नहीं, संदेह, भय या भ्रम नहीं है

हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा,
हेम हंसनी, और इतना भी यहाँ पर कम नहीं है।

पंख चाँदी के मिले हों या कि सोने
के मिले हों, एक दिन झड़ते अचानक,
औ' सभी को देखनी पड़ती किसी दिन
जड़ प्रकृति की एक सच्चाई भयानक,
किन्तु उनके वास्ते रोएँ उन्हें जो
बैठ सहलाते रहे हैं, किन्तु उनसे जो वसंती
बात बहलाते, बवंडर सात दहलाते
रहे हैं, जिन्दगी उनके लिए मातम नहीं है।
हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा,
हेम हंसनी, और इतना भी यहाँ पर कम नहीं है।

--हरिवंश राय 'बच्चन'

प्रश्न-अभ्यास

२.१ सोहत है चँदवा सिर

१. भगवान् श्रीकृष्ण के किस रूप-सौंदर्य को देखकर ग्वालिन 'बौरी' हो गई?

२. ग्वालिन ने मुँदी आँखें खोलने से क्यों मना कर दिया?

२.२ घेरि घेरि घन छाए

१. 'घेरि घेरि घन आए छाए रहे चहुँ ओर
कौन हेत प्राननाथ सुरति बिसारी है।'

पहली पंक्ति में वर्षा ऋतु में बादल उमड़ने का वर्णन किया गया है और दूसरी पंक्ति में गोपिका की विरह-वेदना अभिव्यक्त हुई है। दोनों पंक्तियों में कवि ने क्या भाव-संगति बिठाई है?

२. विरहिणी गोपिका को 'सावन की रात द्रौपदी की साड़ी जैसी' क्यों लग रही है?

३. इस कवित्त में आपको किस पंक्ति ने सबसे अधिक मुग्ध किया है और क्यों?

२.३ हंस की विदा

१. प्रस्तुत कविता में हंस ने हंसनी को क्या जीवन सत्य समझाना चाहा है?

२. उन पंक्तियों को रेखांकित कीजिए, जिनसे सिद्ध होता है कि हंसनी से विदा लेना आवश्यक जानते हुए भी हंस दुखी था।

३. हंस के अनुसार जड़ प्रकृति की किस सच्चाई का सामना हर किसी को करना पड़ता है?

४. हंस ने किनके लिए कहा है- 'जिंदगी उनके लिए मातम नहीं है।'

५. किन सुखद-मधुर स्थितियों में हंस को अपनी प्रिया से अलग होना पड़ा?

६. हंस के अनुसार विदा की कौन-सी स्थिति सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण है और कौन-सी सर्वाधिक सुंदर?

७. **भाव स्पष्ट कीजिए:**

(क) पर मिलीं खुलकर सलिल-बल्कल नलिनियाँ
और बाँहें खोल जल-कुंतल तरंगें

(ख) जिस खुशी के बीच में हम डूबते हैं
जब हमारे बीच में वह डूब जाए।

(ग) पंख चाँदी के मिले हों या कि सोने
के मिले हों, एक दिन झड़ते अचानक,
औ' सभी को देखनी पड़ती किसी दिन
जड़ प्रकृति की एक सच्चाई भयानक।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

२.१ सोहत है चँदवा सिर

पाग = साफा, पगड़ी। **गोरज** = गौओं के चलते समय उनके खुरों से उड़ने वाली धूल जो पवित्र मानी गई है। **हिये** = हृदय स्थल पर। **विलोकत** = देखते ही। **बौरी भई** = पागल हो गई। **माँझि** = बीच में।

२.२ घेरि घेरि घन छाए

सुरति = याद, स्मृति। **बिसारी है** = भुला दी है। **बग पंगति** = बगुलों की कतार। **किंधौ** = अथवा। **विथा** = व्यथा।

२.३ हंस की विदा

हो चुका है चार दिन मेरा तुम्हारा = हम कुछ दिन बड़े प्रेम और विश्वास के साथ मिलकर रहे हैं। **गर्दोगुबारी** = धूल के गुब्बारों से भरी हुई। **सलिल-बल्कल नलिनियाँ** = जल के बल्कल वस्त्र धारण करने वाली कमलनियाँ। **जल-कुंतल तरंगें** = जलरूपी कोमल, स्निग्ध और उज्ज्वल केश फैलाए हुए (तरंगें)। **वसंती बात** = बसंत की हवा। **मातम** = शोक।

जीवन-दर्शन

३.१ एक तिनका

मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
    एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
    एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
    लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
    ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
    तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
    एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

३.२ खिलौना

'मैं तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया दीना का लाल,--
'खेल रहा था जिसको लेकर
राजकुमार उछाल-उछाल!'
व्यथित हो उठी माँ बेचारी--
'था सुवर्ण-निर्मित वह तो!
खेल इसी से लाल,--नहीं है
राजा के घर भी यह तो!'
'राजा के घर! नहीं नहीं माँ
तू मुझको बहकाती है;
इस मिट्टी से खेलेगा क्या
राजपुत्र तू ही कह तो।'
फेंक दिया मिट्टी में उसने
मिट्टी का गुड्डा तत्काल;
'मैं तो वही खिलौना लूँगा'-
मचल गया दीना का लाल।
'मैं तो वही खिलौना लूँगा'
मचल गया शिशु राजकुमार,--
'वह बालक पुचकार रहा था
पथ में जिसको बारंबार।'
'वह तो मिट्टी का ही होगा,
खेलो तुम तो सोने से।'
दौड़ पड़े सब दास-दासियाँ
राजपुत्र के रोने से।
'मिट्टी का हो या सोने का,
इसमें वैसा एक नहीं;

खेल रहा था उछल-उछल कर
वह तो उसी खिलौने से।'
राजहठी ने फेंक दिए सब
अपने रजत-हेम-उपहार:
'लूँगा वही, वही लूँगा मैं।'
मचल गया वह राजकुमार।

-सियारामशरण गुप्त

३.३ निराला को याद करते हुए

उठता हाहाकार जिधर है
उसी तरफ अपना भी घर है

खुश हूँ--आती है रह-रहकर
जीने की सुगंध बह-बहकर

उसी ओर कुछ झुका-झुका-सा
सोच रहा हूँ रुका-रुका-सा

गोली दगे न हाथापाई
अपनी है यह अजब लड़ाई

रोज उसी दर्जी के घर तक
एक प्रश्न से सौ उत्तर तक

रोज़ कहीं टाँके पड़ते हैं
रोज़ उधड़ जाती है सीवन

'दुखता रहता है अब जीवन'

-केदारनाथ सिंह

३.४ एक सुनहली किरण उसे भी दे दो

एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
भटक गया जो अंधियारे के वन में।
लेकिन जिसके मन में,
अभी शेष है चलने की अभिलाषा।
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।

मौन कर्म में निरत
बद्ध पिंजर में व्याकुल
भूल गया जो
दुख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।

तुम जो सजा रहे हो
ऊंची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव पल्लव पर आभा की किरनें,
तुम जो जगा रहे हो
दल के दल कमलों की आँखों के

सब सोए सपने,
तुम जो बिखराते हो भू पर
राशि-राशि सोना
पथ को उद्‌भासित करने,
एक किरण से
उसका भी माथा आलोकित कर दो।
एक स्वप्न
उसके भी सोए मन में
जागृत कर दो।

-कीर्ति चौधरी

प्रश्न-अभ्यास

३.१ एक तिनका

१. 'एक तिनका' कविता का कथ्य बताइए।

२. 'एक तिनका है बहुत तेरे लिए' का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह चेतावनी किसने, किसको और क्यों दी है।

३. 'एक तिनका' के अतिरिक्त इस कविता को निम्नलिखित शीर्षक दिए जा सकते हैं। इन्हें उपयुक्तता के क्रम में रखिए :

(अ) घमंडी का सिर नीचा
(ब) समझ ने कहा
(स) हमारी शक्ति ही क्या है?
(द) तब ग्लानि अपने पर हुई

३.२ खिलौना

१. 'खिलौना' कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि मनुष्य प्रायः उसी वस्तु की अधिक कामना करता है, जिसका उसके पास अभाव है।

२. दोनों बच्चों ने अपने-अपने खिलौने मिट्टी में क्यों फेंक दिए?

३. भाव स्पष्ट कीजिए:

(क) 'मिट्टी का हो या सोने का,
इनमें वैसा एक नहीं ;
खेल रहा था उछल-उछल कर
वह तो उसी खिलौने से।'

(ख) राजहठी ने फेंक दिए सब
अपने रजत हेम उपहार;
'लूँगा वही, वही लूँगा मैं।'
मचल गया वह राजकुमार।

४. इस कविता में बाल-प्रवृत्ति की जिस विशेषता पर बल दिया गया है, उस पर सही का चिह्न लगाइए :

(क) बच्चों को स्वभाव से खिलौने प्रिय हैं।
(ख) बच्चे दूसरों के पास अच्छी चीज का होना सहन ही नहीं कर पाते।

(ग) बच्चे स्वभाव से ही हठी होते हैं।

(घ) अपने खिलौने छोड़कर बच्चे दूसरों के खिलौने पाना चाहते हैं।

३.३ निराला को याद करते हुए

१. निराला की कविता के किस भाव से कवि को महाकवि निराला की याद आई?
२. कवि ने अपने घर का परिचय किस प्रकार दिया है?
३. यहाँ पीड़ा-उत्पीड़न से संघर्ष को अजीब क्यों बताया गया है?
४. समाज में निर्धन-ज़िंदगी की व्यथा-कथा क्या है?
५. कविता में दुखी जीवन से मुक्ति का कौन-सा मौन संकेत है?
६. निम्नलिखित में से सबसे उपर्युक्त उत्तर को छाँटिए :

(क) दुखी जीवन से मुक्ति के संघर्ष पर रुक कर सोच-विचार करें।

(ख) दुखी जीवन को भी सुख-सुगंधि मिलने की आशा है।

(ग) दुखी जीवन से मुक्ति के संघर्ष को क्रांतिकारी रूप दें।

(घ) दुखी जीवन को बहलाने-फुसलाने वाली व्यथा को पहचान लें।

३.४ एक सुनहली किरण उसे भी दे दो

१. कविता में 'सुनहली किरण' देने की बात क्यों कही गई?
२. इस कविता में किन लोगों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट की गई है?

(क) मौन, पीड़ित और निराश श्रमजीवी निर्धन के प्रति।

(ख) भटके और बहके राहगीरों के प्रति।

(ग) पिंजड़े में बंद दुखी पक्षियों के प्रति।

(घ) निष्प्राण लोगों के प्रति।

३. इस कविता में सोए मन में कौन-सा स्वप्न जगाने की कामना की गई है और क्यों?
४. आशय स्पष्ट कीजिए :

(क) भटक गया जो अंधियारे के वन में
लेकिन जिसके मन में,
अभी शेष है चलने की अभिलाषा।

(ख) मौन कर्म में निरत
बंद पिंजर में व्याकुल
भूल गया जो
दुख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।

(ग) तुम जो सजा रहे हो
ऊंची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव पल्लव पर आभा की किरनें

५. गरीब किसान, कमजोर मजदूर, भिखारी या भूखे-नंगे लोग, विषयों पर कविताएँ संकलित कर एक हस्तलिखित पत्रिका तैयार कीजिए और संपादकीय भी लिखिए जिसका शीर्षक हो 'भोर की किरण इस ओर भी'।

६. निम्नलिखित पदबंधों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

अंधियारे के वन, मौन कर्म में लिप्त, चलने की अभिलाषा, सोए सपने, आलोकित गाथा, सोया मन।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

३.१ एक तिनका

मूठ = मुट्ठी। ढब = ढंग, उपाय, तरीका।

३.२ खिलौना

स्वर्ण-निर्मित = सोने से बना। पुचकार = प्यार

३.३ निराला को याद करते हुए

प्रस्तुत कविता निराला को याद करते हुए रची गई है, इसलिए इस पर निराला के व्यक्तित्व और जीवन-दर्शन की स्पष्ट छाप है।

३.४ एक सुनहली किरण उसे भी दे दो

फुनगी = वृक्ष या शाखा का ऊपरी सिरा। ऊर्ध्वमुखी = जिसका मुख ऊपर की ओर उठा हो। उद्भासित = प्रकाशित, चमकता हुआ। आलोकित = प्रकाशित।

भक्ति

४.१ जाउँ कहाँ तजि

जाउँ कहाँ तजि चरन तिहारे।
काको नाम पतित पावन जग? केहि अति दीन पियारे?
कौने देव बराय बिरदहित हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पखान बिटप जड़ जवन कवन सुर तारे?
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे?

-तुलसीदास

४.२ हरि तुम हरौ

हरि तुम हरौ जन की पीर।
द्रौपदी की लाज राखी, तुरत बाढ़्यो चीर।।
भगत कारण रूप नरहरि धर्यो नाहिन धीर।
बूड़तो गजराज राख्यो, कियौ बाहर नीर।।
दासि 'मीरा' लाल गिरिधर, चरण कँवल पै सीर।।

-मीराबाई

४.३ नव प्रकाश बन आओ

नव प्रकाश बन आओ।
    नव प्रकाश बन आओ।
    जीवन के घन अंधकार को
        ज्योति द्रवित कर जाओ।
अंतः स्थित हो मानव का मन
शांत विश्व-जीवन संघर्षण
नव स्वर लहरी में जन भू का
    क्रंदन करुण डुबाओ।
छाया मृत आदर्शों का तम
छाया जड़ भौतिकता का भ्रम
अंध वीथियों में जन-मन की
    नव किरणें बरसाओ।
घृणा द्वेष को प्रीति ग्रथित कर
महानाश में अमृत स्रवित कर
अविश्वास को चिर प्रतीति में
    परिणत कर मुसकाओ।
विश्व-ग्लानि में नव्य रूपधर
श्री शोभा, स्वर्णिम समत्व भर
जन-धरणी में, नवजीवन में
    मन का स्वर्ग बसाओ।
शून्य वेणु उर में नव स्वर भर
मूक व्यथा हर नव मुरलीधर
अभिनव श्री, सुषमा, गरिमा में
    धरणी को लिपटाओ।
    नव प्रकाश बन आओ।

–सुमित्रानंदन पंत

प्रश्न-अभ्यास

४.१ जाउँ कहाँ तजि

१. राम को छोड़कर अन्य किसी देवी-देवता की शरण में कवि क्यों नहीं जाना चाहता?

२. भगवान राम के साथ वे कौन सी यश गाथाएँ जुड़ी हैं, जिनका स्मरण भक्त कवि को बार-बार हो आता है?

३. निम्नलिखित से संबंधित अंतर्कथाओं को स्पष्ट कीजिए:
खग (जटायु), मृग (मारीच), व्याध (अजामिल), पखान (अहिल्या)।

४. इस कविता में जो सर्वाधिक मुख्य भावना व्यक्त हुई है, उसे चुनिए :
(क) भक्ति, (ख) श्रद्धा, (ग) दैन्य, (घ) संकल्प

५. भाव स्पष्ट कीजिए :
(क) काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे?
(ख) देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया बिबस बिचारे।

४.२ हरि तुम हरौ

१. किन-किन प्रसिद्ध घटनाओं का उल्लेख करके मीरा भगवान कृष्ण से अपनी पीड़ाओं और कष्टों के हरण का निवेदन करती है?

२. भक्त ने भगवान की भक्ति कहीं सखा भाव से की है जैसे सूरदास ने, कहीं दास भाव से की है जैसे तुलसी ने। मीरा के उपर्युक्त पद के आधार पर बताइए कि मीरा की भक्ति किस प्रकार की है?

३. 'भगत कारण रूप नरहरि धर्‌यौ नाहिन धीर' में किस प्रसिद्ध पौराणिक कथा का संदर्भ दिया गया है?

४. 'द्रौपदी चीर-हरण' और 'डूबते हुए हाथी की रक्षा' के प्रसंग कक्षा में सुनाइए।

५. इन शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखिए:
भगत, बूड़तो, राख्यो, कँवल पै,

४.३ नव प्रकाश बन आओ

१. कवि नया प्रकाश बनकर आने के लिए क्यों प्रार्थना कर रहा है?

२. समाज में कैसा अंधकार छाया है? उससे मुक्ति कैसे मिल सकती है?

३. घृणा, द्वेष, महानाश, अविश्वास आदि के स्थान पर कवि किन भावों की प्रतिष्ठा चाहता है?

४. कैसी 'नव मुरली' की कल्पना की गई है? उसका धरती पर कैसा प्रभाव पड़ेगा?

५. भाव स्पष्ट कीजिए :
विश्व ग्लानि में नव्य रूप धर

श्री शोभा, स्वर्णिम समत्व भर
जन-धरणी में, नवजीवन में
    मन का स्वर्ग बसाओ।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

४.१ जाउँ कहाँ तजि

विरदहित = यश के लिए। पखान = पत्थर, पाषाण। बिटप = वृक्ष।

४.२ हरि तुम हरौ

पीर = पीड़ा, कष्ट। कँवल = कमल।

४.३ नव प्रकाश बन आओ

अंतःस्थित = मन के भीतर स्थित (बैठा हुआ)। करुण क्रंदन = करुणा से भरी चीख, विलाप। प्रीति-ग्रथितकर = प्रेम में गूँथकर, प्यार से भरकर। अंधवीथि = अंधी गली, वह गली जहाँ अज्ञान का अंधकार छाया है। वेणु = बाँस।

उत्साह और आत्मविश्वास

५.१ उन्हें प्रणाम

कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर, जिधर है मुक्ति प्रकाम!

ज्ञात और अज्ञात मात्र हों जिनके नाम!
वंदनीय उन सत्पुरुषों को सतत प्रणाम!

जिनके गीतों को पढ़ने से मिलती शांति
जिनकी तानों के सुनने से मिटती भ्रांति,
छा जाती मुखमंडल पर यौवन की कांति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रांति।

मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुसकान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान!

जो घावों पर मरहम का कर देते काम!
उन सहृदय हृदयों को है कोटि प्रणाम!

मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग!
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल!

जगा रहे जो सोए गौरव को अभिराम!
उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम!

जंजीरों में कसे हुए सिकचों के पार
जन्मभूमि जननी की करते जयजयकार
सही कठिन हथकड़ियों की, बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार!
स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन के मीत
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम,
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम!

उस आगत को जो अनागत, दिव्य भविष्य
जिनकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य!
सब स्वतंत्र, सब सुखी जहाँ पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात की किरण ललाम!

उस मंगलमय दिन को मेरे कोटि प्रणाम!
सर्वोदय हँस रहा जहाँ, सुख शांति प्रकाम!

-सोहनलाल द्विवेदी

५.२ ललकार

कौन वह स्वर है कि जिससे वीर रस का राग जागे?
कौन डमरू निनाद है जिससे कि शिव का नाग जागे?
कौन-सा वह होम है जिससे समर की आग जागे?
कौन है वह पर्व जिसमें वीर-वर का भाग जागे?
बढ़ चलो ओ वीर! तुमको विजय-श्री की शपथ है,
    वह शपथ आज पुकारती है।
बढ़ चलो ओ वीर! तुमको हिम-शिखर की शपथ है,
    वह शपथ पथ की आरती है।
कौन वह विक्रम! जिसे इतिहास अब भी जानता है?
कौन वह अरि-मुंड है, जिसको कि तू पहचानता है?
कौन-सा वह रक्त है, जो युद्ध में ललकारता है?
कौन-सा वह प्राण है जो व्याघ्र-सा हुंकारता है?
जानता हूँ मैं युगों से जीतने का गर्व है
        जो गर्व फिर से जगमगाए
समय तुझसे माँगता है प्राण की बलि,
        कौन जाने यह समय आए न आए।
बहिन ने राखी तुम्हें बाँधी, नहीं थे व्यर्थ धागे
और माँ के स्वप्न तुझको जन्म देकर भी न जागे?
वीर! तुझमें शक्ति है तो मान को अभिमान कर दे।
पूर्व का तू सूर्य है तो काल को दिनमान कर दे।।
एक हिम के शैल ने यमुना बहाई,
        जो मिली है खोज गंगा का किनारा।
रक्त अब ऐसा बहा दे हिम-शिखर से
        स्वयं गंगा ही उसे खोजे दुबारा।।

-रामकुमार वर्मा

५.३ हाथ की रेखा मिटा दे

हाथ पर तेरे नियति ने खींच एक लकीर
बाँध दी तेरे सुदृढ़ पग में प्रबल जंजीर

देख रेखा ज्योतिषी ने कह दिया तत्काल
तू भिखारी ही रहेगा लिखा तेरे भाल
सिर झुका तूने नियति की मान ली यह बात
स्वयं ही मुर्झा गया तेरा हृदय जलजात
शक्ति, क्षमता और साहस की सृजनता भूल
बह चला फिर तू समय की धार के अनुकूल
है तुझे विश्वास जागेगी कभी तकदीर
टूट जाएगी स्वयं ही पाँव की जंजीर।

हाथ की रेखा निहारी बन नियति का दास
क्यों न निज भुजदंड देखे ले अमिट विश्वास
क्यों न मन परखा उमंगों की जहाँ है भीड़
अगर चाहे नील नभ पर भी बना दे नीड़
कर रहा है क्यों प्रखरतम बुद्धि का उपहास
जो अगर चाहे गगन को खींच लाए पास
बुद्धिबल से तोड़ तू तकदीर की प्राचीर
बाहुबल से तू उगा मोती, धरणि उर चीर।

हाथ की रेखा मिटा दे पकड़ आज कुदाल
तू झुका दे इन हठीले पर्वतों के भाल
बैठ साहस की तरी पर विहँस सागर माप

और निज चंचल पगों से सकल धरणी नाप
रहम के जल से नहीं बुझती किसी की प्यास
बिन परिश्रम के नहीं मिलता कभी उल्लास
मत व्यथा अपनी सुना तू, हर पराई पीर
और तेरी पीर तेरे हित बनेगी तीर।

-देवराज दिनेश

प्रश्न-अभ्यास

५.१ उन्हें प्रणाम

१. 'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि ने किन्हें 'सत्पुरुष' कहकर वंदनीय माना है?

२. कवि ने आदर्श नेताओं की क्या विशेषताएँ बताई हैं?

३. 'स्वदेश के स्वाभिमान' से क्या अभिप्राय है? कवि उसको क्यों प्रणाम करता है?

४. सच्चे देशभक्त के किन-किन गुणों की ओर कवि ने संकेत किया है?

५. फाँसी के तख्तों पर झूल जाने वाले तथा दीवारों में चुने जाने वालों के प्रति क्या भाव प्रकट हुआ है? ऐसे कुछ वीरों के नाम बताइए।

६. भाव स्पष्ट कीजिए :

(क) हँसते-हँसते शूलों को लेते हैं चूम!

(ख) पी जाते हैं विष का घूम!

(ग) सर्वोदय हँस रहा जहाँ सुख शांति प्रकाम।

७. देश-भक्तों और बलिदानियों की महान कथाओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

५.२ ललकार

१. विविध प्रश्नों के द्वारा कवि क्या प्रतिपादित करना चाहता है?

२. कवि वीर पुरुषों को क्या चुनौती देता है?

३. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:

(क) वीर! तुझमें शक्ति है तो मान को अभिमान कर दे।
पूर्व का तू सूर्य है तो काल को दिनमान कर दे।।

(ख) एक हिम के शैल ने यमुना बहाई,
जो मिली है खोज गंगा का किनारा।
रक्त अब ऐसा बहा दे हिम-शिखर से
स्वयं गंगा ही उसे खोजे दुबारा।।

४. राखी के धागों और माँ के स्वप्न का उल्लेख कवि किस उद्देश्य से कर रहा है?

५.३ हाथ की रेखा मिटा दे

१. 'हाथ की रेखा मिटा दें' में कौन-सा प्रेरणा-संदेश है?

२. ज्योतिषी के कथन पर विश्वास करने वाला व्यक्ति अपनी कौन-सी सामर्थ्य भूल जाता है और उसकी दशा कैसी हो जाती है?

३. पाँव की जंजीर वास्तव में कब टूट जाएगी?

४. अपने भुजदंडों पर अमिट विश्वास की बात कवि ने क्यों कही है?

५. कविता के आधार पर व्यक्ति के बुद्धिबल की संभावनाएँ बताइए?
६. कृपा-जल से किसी की प्यास क्यों नहीं बुझती?
७. 'मत व्यथा अपनी सुना तू, हर पराई पीर' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
८. आशय स्पष्ट कीजिए:

(क) शक्ति, क्षमता और साहस की सृजनता भूल।
बह चला फिर तू समय की धार के अनुकूल।

(ख) क्यों न मन परखा उमंगों की जहाँ है भीड़।
अगर चाहे नील नभ पर भी बना दें नीड़।।

(ग) बैठ साहस की तरी पर विहँस सागर माप।
और निज चंचल पगों से सकल धरणी नाप।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

५.१ उन्हें प्रणाम

शोषित = सताए हुए, जिनका शोषण हुआ हो। **मुक्ति-प्रकाम** = मुक्ति की चाह। **वितान** = विस्तार, फैलाव।

५.२ ललकार

निनाद = स्वर। **होम** = हवन, यज्ञ। **समर** = युद्ध। **विक्रम** = शक्ति। **अरि मुंड** = शत्रु का मुंड। **दिनमान** = सूर्य।

टिप्पणी : 'ललकार' कविता १९६५ में भारत पाक युद्ध के संदर्भ में लिखी गई है। कवि भारतवासियों को उनके गौरवमय इतिहास का स्मरण दिलाते हुए उन्हें देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने का उद्‌बोधन दे रहा है।

५.३ हाथ की रेखा मिटा दे

हाथ की रेखा = हाथ पर खिंची लकीरें, जिनसे ज्योतिषी भाग्य बाँचते हैं। **नियति** = भाग्य, तकदीर। **सृजनता** = रचनात्मकता। **प्राचीर** = दीवार। **तीर** = किनारा।

देश प्रेम और नवजागरण

६.१ हिमाद्रि तुंग शृंग से

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती--
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती--
'अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।'
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ,
विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के--
रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्यसिंधु में, सुवाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो--बढ़े चलो, बढ़े चलो!

-जयशंकर प्रसाद

६.२ तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर--
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार--
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगी छा गई,
प्रायः हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं थी जो सुनी झंकार।
एक छन के बाद वह काँपी सुघर,
दुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा--
'मैं तोड़ती पत्थर।'

-सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

६.३ समता का संवाद

भारतमाता का मंदिर यह, समता का संवाद जहाँ
सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ।

जाति, धर्म या संप्रदाय का नहीं भेद व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम सम्मान यहाँ।
राम-रहीम, बुद्ध-ईसा का सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव-संस्कृतियों के गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ।
सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लें हम,
आओ, यहाँ अजातशत्रु बन, सबको मित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम
सौ-सौ आदर्शों को लेकर एक चरित्र बना लें हम
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ।

मिला सत्य का हमें पुजारी, सफल काम उस न्यायी का
मुक्ति-लाभ कर्तव्य यहाँ है एक-एक अनुयायी का
बैठो माता के आँगन में, नाता भाई-भाई का
एक साथ मिल बैठ बाँट लो, अपना हर्ष-विषाद यहाँ,
सबका शिव-कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ!

–मैथिलीशरण गुप्त

६.४ मेरे देश

मेरे देश, मेरे देश
आती रोज सुबह दुलराती,
श्रम की काया, धूप नहाती,
संध्या के सोने के रंग की--
कीर्ति पिंडुकी विजन डुलाती।
रात्रि थकन हरती जीवन की--
देती नव परिवेश।
मेरे देश, मेरे देश।
जाति-धर्म से लक्ष्य बड़ा है,
छोड़ो, जो कुछ सड़ा-गला है,
तोड़ो, तोड़ो संकल्पों को--
पथ में, जो म्रियमाण अड़ा है।
समय हाथ में रहे, विश्व को--
मिले अभय संदेश।
मेरे देश, मेरे देश।
भले-बुरे को देखो भालो,
भेद-भाव की ग्रंथि निकालो,
भाषा देकर शक्ति-शौर्य को--
सूरजमुखी भविष्य सँभालो।
समता के ही दिशाबोध में--
होंगे क्लेश अशेष।
मेरे देश, मेरे देश।

-शील

प्रश्न-अभ्यास

६.१ हिमाद्रि तुंग शृंग से

१. स्वतंत्रता भारतीय वीर पुत्रों को हिमालय के ऊंचे शिखर से क्यों पुकार रही है?

२. स्वतंत्रता-संघर्ष के मार्ग को पुण्य पंथ क्यों कहा गया है?

३. स्वतंत्रता देशवासियों को क्या प्रेरणा दे रही है?

४. प्राचीन भारत की असंख्य कीर्ति कथाओं में से किसी प्रसंग का उल्लेख कीजिए।

५. निम्नलिखित के लिए कविता में किन-किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है-.
 (क) स्वतंत्रता (ख) मातृभूमि के सपूत

६.२ मैं तोड़ती पत्थर

१. 'मैं तोड़ती पत्थर' कथन से मजदूरनी के मन का कौन-सा भाव प्रकट किया गया है?
 (क) वह कवि से अपने बारे में बात करना चाहती है।
 (ख) वह पत्थरदिल व्यवस्था पर चोट करना चाहती है।
 (ग) वह कवि से अपने प्रति सहानुभूति चाहती है।
 (घ) वह पत्थरों को निरंतर तोड़ते रहना चाहती है।

२. उन पंक्तियों को उद्धृत कीजिए, जिनमें निम्नलिखित भावों की व्यंजना है:
 (क) मजदूरनी चुपचाप अपने काम में लगी है।
 (ख) समाज द्वारा सताए जाने पर भी वह हारी नहीं है।
 (ग) श्रमिक वर्ग अपनी सुविधा-असुविधा की चिन्ता किए बिना काम करता है।

३. भाव स्पष्ट कीजिए:
 (क) देखा मुझे उस दृष्टि से
 जो मार खा रोई नहीं।
 (ख) कोई न छायादार
 पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

४. कविता के आधार पर ग्रीष्मऋतु की दोपहर का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए।

६.३ समता का संवाद

१. कवि के अनुसार भारतमाता के मंदिर की क्या विशेषताएँ हैं?

२. भारतीय स्वभाव की सहिष्णुता और एकात्मता का उल्लेख किन पंक्तियों में हुआ है?

३. कवि ने अनेक आदर्शों को लेकर एक आदर्श राष्ट्रीय चरित्र बनाने की कामना व्यक्त की है। आप ऐसे चरित्र-निर्माण के लिए किस-किस आदर्श को अपनाना चाहेंगे?

४. 'मिला सत्य का हमें पुजारी, सफल काम उस न्यायी का'

उपर्युक्त पंक्ति में 'पुजारी' किसे कहा गया है और क्यों? उसके 'सफल काम' होने और उसे 'न्यायी' कहने से क्या तात्पर्य है?

६.४ मेरे देश

१. कवि के अनुसार हमारे देश के भोर और संध्या तथा दिन और रात की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

२. कवि क्या छोड़ने और क्या तोड़ने को उत्प्रेरित करता है और क्यों?

३. देश के दुख-दर्द दूर करने के लिए कवि ने क्या आवश्यक माना है?

४. निम्नलिखित का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(क) समय के हाथ में रहे, विश्व को
मिले अभय संदेश।

(ख) तोड़ो, तोड़ो संकल्पों के
पथ में, जो म्रियमाण अड़ा है।

५. शक्ति और शौर्य को भाषा देने से कवि का क्या तात्पर्य है? इससे समाज और देश को क्या लाभ हो सकता है?

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

६.१ हिमाद्रि तुंग शृंग से

हिमाद्रि = हिमालय पर्वत। तुंग = ऊंचा, उन्नत। शृंग = चोटी। प्रबुद्ध = जाग्रत। भारती = सरस्वती। स्वयंप्रभा = अपनी ज्योति से युक्त। समुज्ज्वला = बिल्कुल साफ। अमर्त्य = अमर, जिसे मृत्यु नहीं आती, देवता। प्रशस्त = खुला। विकीर्ण = फैला हुआ। अराति = दुश्मन, शत्रु। सुवाडवाग्नि = समुद्र की सुंदर ज्वाला। प्रवीर = अच्छा वीर।

६.२ तोड़ती पत्थर

पथ = रास्ता। बैठी हुई स्वीकार = सहज रूप से सभी कुछ सहने की प्रतिमूर्ति। नत नयन = झुकी हुई आँखें। गुरु = बड़ा। प्राकार = परकोटा, नगर या किले के चारों ओर रक्षा के लिए बनी दीवार। छिन्नतार = टूटे हुए तार। सीकर = पसीने की बूँदें।

६.३ समता का संवाद

शिव-कल्याण = भलाई। व्यवधान = रुकावट। भव-संस्कृति = विश्व की संस्कृतियाँ। प्रेम-उन्माद = प्रेम का नशा। अजातशत्रु = जिसका कोई शत्रु न हो। जयनाद = विजय की घोषणा। मुक्तिलाभ = स्वतंत्रता पाना। हर्ष-विषाद = सुख-दुख।

६.४ मेरे देश

पिंडुकी = कबूतरी (कबूतर की मादा)। **विजन** = एकांत, जन-शून्य। **परिवेश** = विशिष्ट वातावरण। **म्रियमाण** = मरणशील। **अभय** = निडरता। **ग्रंथि** = गाँठ। **क्लेश** = दुख-दर्द। **अशेष** = समाप्त।

टिप्पणी : (१) 'मेरे देश' कविता में दिन-रात का वर्णन करने के बाद कवि संदेश देता है कि प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए तुच्छ विचारों को तिलांजलि देना आवश्यक है।

(२) 'मेरे देश' कविता के रचयिता 'शील' (मन्नूलाल मिश्र) का जन्म कानपुर जिले के पाली गाँव में १५ अगस्त सन् १९१४ई० को हुआ था। उन्होंने संस्कृत एवं हिंदी का गहन अध्ययन किया। 'शील' आजादी की लड़ाई में कई बार जेल गए। उनकी कविताओं का मुख्य स्वर जन-चेतना है। वस्तुतः शील जी सर्वहारा वर्ग के पक्षधर कवि हैं। 'चर्खाशाला', 'एक पग', 'उदय पथ', 'लावा और फूल', 'कर्मवाची शब्द हैं ये' उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। 'शील' के कई नाटक एवं कहानी संग्रह भी प्रकाशित हैं।

विविध

७.१ बंजारानामा

टुक हिर्सो-हवा को छोड़ मियाँ, मत देश-विदेश फिरे मारा।
कज्जाक अजल का लूटे है, दिन-रात बजाकर नक्कारा।।
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतर क्या गोएँ पल्ला सर मारा।
क्या गेहूँ, चावल, मोठ, मटर, क्या आग धुआँ और अंगारा।।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।।१।।
तू बधिया लादे बैल मरे, जो पूरब पच्छिम आवेगा।
या सूद बढ़ाकर लावेगा, या टोटा बाटा पावेगा।।
कज्जाक अजल का रस्ते में जब भाला मार गिरावेगा।
धन, दौलत, नाती, पोता क्या एक कुनबा काम न आवेगा।।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।।२।।
जब चलते-चलते रस्ते में यह गौन तेरी ढल जावेगी।
इक बधिया तेरी मिट्टी पर, फिर घास न चरने पावेगी।
यह खेप जो तूने लादी है, सब हिस्सों में बँट जावेगी।
धी, पूत, जमाई, बेटा क्या, बंजारिन पास न आवेगी।।
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतर क्या आग धुआँ और अंगारा।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।।३।।
यह धूम धड़क्का साथ लिए क्यों फिरता है जंगल-जंगल?
इक तिनका साथ न जावेगा, मौकूफ हुआ जब अन और जल।।
घर बार अटारी, चौपारी, क्या खासा, तनसुख और मलमल।
क्या चिलमन, पर्दे, फर्श नए, क्या लाल पलंग और रंग-महल।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।।४।।
क्या सख्त मकाँ बनवाता है, खम तेरे तन का है पोला।
तू ऊंचे कोठ उठाता है, वाँ गोर गढ़े ने मुँह खोला।।
क्या रैनो खंदक रंद बड़े, क्या बुर्ज कँगूरा अनमोला।
गढ़, कोट, रहकला, तोप किला, क्या शीशा दारू और गोला।।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।।५।।

–नजीर अकबराबादी

७.२ एक फूल की चाह

उद्वेलित कर अश्रु-राशियाँ
हृदय-चिताएँ धधकाकर,
महा महामारी प्रचंड हो
फैल रही थी इधर-उधर।
क्षीण-कंठ मृत वत्साओं का
करुण-रुदन दुर्दांत निताँत,
भरे हुए था निज कृश रव में
हाहाकार अपार अशांत।
बहुत रोकता था सुखिया को,
'न जा खेलने को बाहर'
नहीं खेलना रुकता उसका
नहीं ठहरती वह पल-भर।
मेरा हृदय काँप उठता था,
बाहर गई निहार उसे;
यही मनाता था कि बचा लूँ
किसी भाँति इस बार उसे।
भीतर जो डर रहा छिपाए,
हाय! वही बाहर आया।
एक दिवस सुखिया के तनु को
ताप-तप्त मैंने पाया।
ज्वर में विह्वल हो बोली वह,
क्या जानूँ किस डर से डर,
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर।

*   *   *   *

क्रमशः कंठ क्षीण हो आया

शिथिल हुए अवयव सारे,
बैठा था नव-नव उपाय का
चिंता में मैं मन मारे।
जान सका न, प्रभात सजग से
हुई अलस कब दोपहरी,
स्वर्ण-घनों में कब रवि डूबा,
कब आई संध्या गहरी।
सभी ओर दिखलाई दी बस,
अंधकार की ही छाया।
छोटी-सी बच्ची को ग्रसने
कितना बड़ा तिमिर आया॰
ऊपर विस्तृत महाकाश में
जलते-से अंगारों से,
झुलसी-सी जाती थीं आँखें
जगमग जगते तारों से।
देख रहा था-जो सुस्थिर हो
नहीं बैठती थी क्षण-भर,
हाय! वही चुपचाप पड़ी थी
अटल शांति-सी धारण कर।
सुनना वही चाहता था मैं
उसे स्वयं ही उकसाकर
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर।

* * * *

ऊंचे शैल-शिखर के ऊपर
मंदिर था विस्तीर्ण विशाल,
स्वर्ण-कलश सरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि-कर-जाल।
दीप-धूप से आमोदित था
मंदिर का आँगन सारा,

गूँज रही थी भीतर-बाहर
    मुखरित उत्सव की धारा।
भक्त-वृंद मृदु-मधुर कंठ से,
    गाते थे सभक्ति मुद-मय,--
'पतित-तारिणी पाप-हारिणी,
    माता तेरी जय-जय-जय!'
'पतित-तारिणी, तेरी जय-जय'
    मेरे मुख से भी निकला,
बिना बढ़े ही मैं आगे को
    जाने किस बल से ढिकला।
मेरे दीप-फूल लेकर वे
    अंबा को अर्पित करके,
दिया पुजारी ने प्रसाद जब
    आगे को अंजलि भरके;
भूल गया उसका लेना झट,
    परम लाभ-सा पाकर मैं।
सोचा, -बेटी को माँ के ये
    पुण्य-पुष्प दूँ जाकर मैं।

* * * *

सिंहपौर तक भी आँगन से
    नहीं पहुँचने मैं पाया,
सहसा यह सुन पड़ा कि-'कैसे
    यह अछूत भीतर आया?
पकड़ो, देखो भाग न जावे,
    बना धूर्त यह है कैसा,
साफ स्वच्छ परिधान किए है,
    भले मानुषों के जैसा!
पापी ने मंदिर में घुसकर
    किया अनर्थ बड़ा भारी,
कलुषित कर दी है मंदिर की

चिरकालिक शुचिता सारी।'
ऐं, क्या मेरा कलुष बड़ा है
देवी की गरिमा से भी,
किसी बात में हूँ मैं आगे
माता की महिमा के भी?
माँ के भक्त हुए तुम कैसे,
करके यह विचार खोटा?
माँ के सम्मुख ही माँ का तुम
गौरव करते हो छोटा!
कुछ न सुना भक्तों ने, झट से
मुझे घेरकर पकड़ लिया,
मार मारकर मुक्के-घूँसे
धम-से नीचे गिरा दिया!
मेरे हाथों से प्रसाद भी
बिखर गया हा! सब-का-सब,
हाय! अभागी बेटी तुझ तक
कैसे पहुँच सके यह अब!
* * * *
न्यायालय ले गए मुझे वे,
सात दिवस का दंड-विधान
मुझको हुआ, हुआ था मुझसे
देवी का महान अपमान!
मैंने स्वीकृत किया दंड वह
शीश झुकाकर चुप ही रह!
उस असीम अभियोग, दोष का
क्या उत्तर देता, क्या कह?
सात रोज ही रहा जेल में
या कि वहाँ सदियाँ बीतीं,
अविश्रांत बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं।

दंड भोगकर जब मैं छूटा,
पैर न उठते थे घर को!
पीछे ठेल रहा था कोई
भय-जर्जर तनु पंजर को।
पहले की-सी लेने मुझको
नहीं दौड़कर आई वह।
उलझी हुई खेल में ही हा!
अब की दी न दिखाई वह।
उसे देखने मरघट को ही
गया दौड़ता हुआ वहाँ,--
मेरे परिचित बंधु प्रथम ही
फूँक चुके थे उसे जहाँ।
बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी।
अंतिम बार गोद में बेटी,
तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ के प्रसाद का
तुझको दे न सका मैं हा!

-सियारामशरण गुप्त

प्रश्न-अभ्यास

७.१ बंजारानामा

१. इस कविता में बंजारा किसे कहा गया है और क्यों?

२. बंजारा सब-कुछ छोड़कर क्या लादकर चल देता है?

३. कज्ज़ाक अजल कौन है? वह किस प्रकार दिन-रात नक्कारा बजाकर लूटता है?

४. बंजारानामा में कवि किस जीवन सत्य की व्याख्या करता है और क्या चेतावनी देता है?

५. एक ओर कवि ने बधिया, भैंसा, बैल, ऊंट, चावल और मोठ-मटर की चर्चा की है तो दूसरी ओर घरबार, अटारी, चिलमन, पर्दे, फर्श और रंगमहल की चर्चा की है। दोनों को ही ठाठ बताया है। क्यों? इनके बीच क्या संगति है?

६. भाव स्पष्ट कीजिए:

(क) जब चलते-चलते रास्ते में
यह गौन तेरी ढल जाएगी।

(ख) इक तिनका साथ न जाएगा
मौकूफ़ हुआ जब अन्न और जल।

(ग) क्या सख्त मकाँ बनवाता है
खम तेरे तन का है पोला।

(घ) तू ऊंचे कोठ उठाता है,
वाँ गोर गढ़े ने मुँह खोला।

७. नजीर अकबराबादी की काव्य-भाषा पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

७.२ एक फूल की चाह

१. सुखिया का पिता पुत्री के लिए देवी के प्रसाद के प्रसाद का फूल लाना चाहता था, क्योंकि:

(क) फूल लेने के बहाने वह देवी के दर्शन कर लेता।

(ख) वह पुत्री की अंतिम इच्छा पूरी कर पाता।

(ग) फूल देने से सुखिया रोगमुक्त हो जाती।

२. 'भीतर जो डर रहा छिपाए, हाय वही बाहर आया' 'कौन सा डर था जो बाहर आया'? कैसे?

३. किन पंक्तियों से पता चलता है कि यह कविता स्वतंत्रता से पूर्व लिखी गई थी?

४. कविता की उन पंक्तियों को पढ़कर सुनाइए जिनमें मंदिर [illegible] और हलचल का चित्रण है?

५. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए:

(क) छोटी सी बच्ची को ग्रसने
कितना बड़ा तिमिर आया।

(ख) माँ के सम्मुख ही माँ का तुम
गौरव करते हो छोटा।

(ग) अविश्रांत बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं।

(घ) बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी

६. *निम्नलिखित पंक्तियों का अलंकार-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:*

(क) स्वर्ण कलश सरसिज-विहसित थे
पाकर समुदित रवि-कर-जाल।

(ख) हाय फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी।

(ग) उद्वेलित कर अश्रु राशियाँ
हृदय-चिताएँ धधकाकर

शब्दार्थ और टिप्पणी

७.१ बंजारानामा

टुक = जरा। **हिर्सो हवा** = लोभ-लालच। **कज़्ज़ाक** = डाकू। **अजल** = मौत। **शुतर** = ऊंट। **गौन** = जानवरों पर माल लादने का थैला। **खेप** = पारी।

७.२ एक फूल की चाह

मृतवत्सा = जिस माँ की संतान मर गई हो। **तनु** = शरीर। **समुदित** = उदय हुआ। **रवि-कर-जाल** = सूर्य की किरणें। **मुद-मय** = आनंद से भरे। **सिंह-पौर** = मुख्य द्वार। **अविश्रांत** = बिना विराम किए, लगातार।